पाठ 18

ब्रज–माधुरी

– कविवर पद्‌माकर/हरिश्चंद्र/बेनी

A3IQ94

ब्रजभाषा मूलतः ब्रज क्षेत्र की भाषा है। यह विक्रम की 13वीं शताब्दी से लेकर 20वीं शताब्दी तक भारत में साहित्यिक भाषा के रूप में प्रतिष्ठित रही। आज भी यह भाषा मथुरा, आगरा और अलीगढ़ जिलों में बोली जाती है। इसे हम केंद्रीय ब्रजभाषा भी कह सकते हैं। प्रारम्भ में ब्रजभाषा में ही काव्य रचना हुई। भक्तिकाल, रीतिकाल और आधुनिक काल तथा आरंभिक वर्षों में प्रचुर मात्रा में साहित्य सृजन इस भाषा में हुआ, जिनमें सूरदास, रहीम, रसखान, बिहारी, केशव, धनानन्द, भारतेंदु, जयशंकर प्रसाद आदि कवि प्रमुख हैं। प्रस्तुत पद में भक्ति और श्रृंगार के भाव सामर्थ्य और प्रवाह को देखा जा सकता है।

घनाक्षरी

चितै–चितै चारों ओर चौंकि–चौंकि परैं त्योंही,
जहाँ–तहाँ जब–तब खटकत पात है।
भाजन सो चाहत, गँवार ग्वालिनी के कछु,
डरनि डराने से उठाने रोम गात हैं।।
कहैं 'पदमाकर' सुदेखि दसा मोहन की,
सेष हू, महेस हू, सुरेस हू, सिहात हैं।
एक पाँय भीत, एक पाँय मीत काँधे धरें,
एक हाथ छींकौ एक हाथ दधि खात हैं।। 1।।

– पद्‌माकर

पंकज कोस में भृंग फस्यौ, करतौ अपने मन यों मनसूबा।
होइगो प्रात उएँगे दिवाकर, जाउँगो धाम पराग लै खूबा।।
'बेनी' सो बीच ही और भई नहिं काल को ध्यान न जान अजूबा।
आय गयंद चबाय लियौ, रहिगो मन–ही–मन यों मनसूबा।। 2।।

– बेनी

सखी हम काह करैं कित जायें।
बिनु देखे वह मोहिनी मूरति नैना नाहिं अघायँ।
बैठत उठत सयन सोवत निस चलत फिरत सब ठौर।
नैनन तें वह रूप रसीलो टरत न इक पल और।
सुमिरन वही ध्यान उनको ही मुख में उनको नाम।
दूजी और नाहिं गति मेरी बिनु मोहन घनश्याम।
सब ब्रज बरजौ परिजन खीझौ हमरे तो अति प्रान।
हरीचन्द हम मगन प्रेम–रस सूझत नाहिं न आन।। 3।।

– भारतेंदु

शब्दार्थ :– **चितै–चितै**–टोह या आहट लेते हुए, **चौंकना**–हैरान होना, **खटकना**–आहट होना, खलना, **भाजन**–भागना, **रोम**–देह के बाल, रोयाँ, लोम, **गत**–शरीर, **अंग–सिहाना**–स्पर्धा करना, पाने के लिये ललचना, लुभाना, **भीत**–दीवाल, **मीत**–मित्र, **छींका**–शिकव, रस्सी का लटकता हुआ जालदार फँदा जिसपर बिल्ली आदि के ड़र से दूध या खाने की दूसरी वस्तुएँ रखते हैं, सिकहर, **दधि**–दही, **पंकज**–कमल, कीचड़ में उत्पन्न होनेवाला, **भृंग**–भौरा, भ्रमर, **मंसूबा**–उत्साहित होना, हौसला करना, **धाम**–स्थान,ठौर, अपना गृह या आश्रय स्थल, **पराग**–वह रज या धूलि जो फूलों के बीच लंबे केसरों पर जमा रहती है, पुष्परज, **दिवाकर**–सूर्य, **अजूबा**–अद्‌भुत,अनोखा, अनूठा, **गयंद**–बड़ा हाथी, **अघाना**–तृप्त होना, बरजना, मना करना, रोकना, **गति**–अवस्था, दशा, हालत, **सुमिरन**–स्मरण।

अभ्यास

पाठ से

1. 'चितै–चितै चारो ओर' इस छंद में कौन बार–बार चौंककर इधर–उधर देख रहा है और क्यों?
2. कमल में भौंरा कैसे बंद हो गया ?
3. कमल कोष में बंद भौंरा मन ही मन क्या सोच रहा था ?
4. भौंरे की इच्छाओं का अंत कैसे हुआ ?
5. नैन अघाने का क्या आशय है ?
6. नायिका अपनी सखी से मन की किन दुविधाओं का उल्लेख करती है ?

7. भाव स्पष्ट कीजिए –

   सुमिरन वही ध्यान उनको ही मुख में उनको नाम।
   दूजी और नाहिं गति मेरी बिनु मोहन घनश्याम।।

पाठ से आगे

A3SLAR

1. भौंरे के मन में ढेर सारी इच्छाएँ थीं जो अगले पल में ध्वस्त हो गईं! हमारे मन में भी ढेर सारी इच्छाएँ जन्म लेती हैं पर वे पूर्ण नहीं हो पातीं क्यों ? साथियों के साथ विचार कर लिखिए।
2. बाल श्रीकृष्ण की लीलाओं को आपने अपने बड़े–बुजुर्गों से सुना और पुस्तकों में पढ़ा होगा, जो लीला आपको प्रभावित करती है उसे लिख कर कक्षा में सुनाइए।
3. जिस तरह श्रीकृष्ण बाँसुरी (वाद्य यंत्र) बजाते थे वैसे ही आप भी कोई वाद्य यंत्र बजाते होंगे। आप किस प्रकार का वाद्य यंत्र बजाना पसंद करेंगे कारण सहित अपना अनुभव लिखिए।
4. पद में सखी के मन में उलझन है कि वह क्या करे और कहाँ जाए? ऐसी ही हमारे जीवन में अनेक उलझने हैं जिसे हम किससे कहें। क्या आपके साथ भी ऐसा होता है? इस विषय पर अपने साथियों के साथ चर्चा कर अपने अनुभवों को लिखिए।
5. बालक कृष्ण के दही चुराने के पीछे क्या मकसद हो सकता है कक्षा में चर्चा करें।

भाषा से

A42HCE

1. ब्रज माधुरी पाठ के पद ब्रजभाषा में लिखे गए हैं। ब्रजभाषा के निम्न शब्दों को छत्तीसगढ़ी में क्या कहते हैं? ढूँढ़ कर लिखिए, जैसे–सिहात है, काँधे, पाँव, मीत, आजु लौ, कित, उरहानौ, होइगो, प्रात, सखी, बरजौ, खीजौ, काह।
2. चितै–चितै चारो ओर चौंकि–चौंकि परै त्योंहि, पंक्ति में 'च' वर्ण की आवृति हुई है जो अनुप्रास अलंकार है। इस अलंकार के अन्य उदाहरण कविता से ढूँढ़ कर लिखिए।
3. कुछ शब्दों के दो या दो से अधिक अर्थ होते हैं जो उसके सन्दर्भ के आधार पर अर्थगत भिन्नता रखते हैं जैसे 'भाग' शब्द का अर्थ भागना और हिस्सा है। निम्नलिखित शब्दों के अर्थगत भिन्नता को स्पष्ट करते हुए वाक्य में प्रयोग कीजिए–काल, भीत, जग, रोम, मन, मोहन, घनश्याम, आन।
4. (क) 14 वर्षों की **अवधि** बीत जाने के बाद राम के न लौटने से लोग आकुल होने लगे।

(ख) तुलसीदास जी ने रामचरितमानस की रचना **अवधी** में की है।

ऊपर के दो उदाहरण से स्पष्ट है कि सुनने में बहुत समान लगनेवाले शब्द का अर्थ और प्रयोग की दृष्टि से भिन्नता रखते हैं, जिन्हें हम श्रुति समभिन्नार्थी शब्दों के रूप में पहचानते हैं निम्नलिखित ऐसे ही शब्दों का अर्थ ग्रहण करते हुए वाक्य में प्रयोग कीजिए।

कोष–कोस, रीति–रीती, अंश–अंस, दिन–दीन, चिर–चीर, अली–अलि, कूल–कुल।

5. दैनिक जीवन में कभी हम हँसते हैं, कभी उदास हो जाते हैं, कभी क्रोधित होते हैं, कभी प्रेम करते हैं तो कभी घृणा करते हैं और कभी हमें आश्चर्य होता है। ये ही भाव कविताओं में भी प्रकट होते हैं। इन भावों को साहित्य में 'रस' कहा जाता है। रस के निम्नलिखित दस भेद हैं–

   श्रृंगार, वीर, रौद्र, हास्य, वीभत्स, अद्‌भुत, करुण, शांत, भयानक और वात्सल्य।

   पाठ में पंकज कोष ....इस छंद में जीवन की निरर्थकता बताई गई है। अतः यह शांत रस की रचना है। इसी तरह सखी हम काह करें ....इस छंद में गोपियों का श्रीकृष्ण के प्रति प्रेम भाव प्रकट हो रहा है। अतः यहां श्रृंगार रस विद्यमान है। उक्त प्रकार के छंदों के एक–एक अन्य उदाहरण शिक्षक से पूछकर लिखें व समझें।

योग्यता विस्तार

A4BDE2

1. चितै–चितै चारो ओर' इस छंद के आधार पर श्रीकृष्ण के माखन चोर के रुप का जो भाव आपके मन पर उभरा है उसका अपने शब्दों में चित्रांकन कीजिए।
2. श्रीकृष्ण की बाल लीलाओं पर आधारित सूर, रसखान नन्ददास आदि भक्त कवियों द्वारा रचित रचना को पुस्तकालय से खोज कर पढ़िए।
3. ब्रजभाषा के कुछ कवित्त और सवैया छंदों को खोजकर पढ़िए और उनका बालसभा में सस्वर गायन कीजिए।